PART 21

षोडस स्तरंग:

(1)

Date

श्री ग्रन्थ चौकारबेरादय

प्राण योग जो तुम्हे सुनाया । कार्य सिद्ध का मंत्र बताया ।
प्राणायाम ही ~~[illegible]~~ सबका सार । करें सिद्ध कार्य वेद अनुसार ।
स्वरूप वही हमने भी रचाया । आधे को नर आधे को नारी बनाया ।
वा स्वरूप है आदि निशानी । सत्य स्वरूप से जीव कहानी ।
प्रथम शब्द सुर निरमृति रचाये । जिसने वेद और लोक बनाये ।
दूजा शब्द अकुंर से आया । उत्पत्ति प्रलय उसी ने रचाया ।
तीजी माया मन की आती । जीव उत्पत्ति बीज को लाती ।
चौथे चन्द्र सूर्य प्रकाश । करते जिसमे शुक्ल भेद निवास ।
पाँच दिनरात वतिथि बनाये । सूर्य चन्द्र स्वामी उनके बनाये ।
एक नार एक पुरुष कहाया । चन्द्र सूर्य नाम उन्होंने पाया ।

साखी:- भेद इनका तन बसा, पाँच तत्व निज सार ।।
कहे कबीर पाये वही, जिसका गुरु करे उद्धार ।।

चौपाई

काया मर्म भेद है अति भारी । नीर पवन दोऊ इसने धारी ।
उत्पत्ति करता सबकी पानी । नीर से जिन्दा रहते प्राणी ।
दूजा अंग पवन कहलाता । जिसपे जग सोहम ध्यान लगाता ।
पवन भेद है अगम अपार । आदि अन्त व सबका सार ।
पवन संग स्वांस आता जाता । बिन सदगुरु भेद मिल ना पाता ।
इनसे ऊपर सूर्य चन्द्र की धारा । सुखद चन्द्र और सूर्य विचार ।
~~प्रथक भेद~~
प्रथक कर भेद जो इनका जाने । सूर्य चन्द्र भेद दोऊ जाने ।
~~दिनतिथि पक्ष सक्रांति~~
दिन तिथि पक्ष सक्रांति विचार । उन पर पाँच तत्व विस्तार ।
सम्पूर्ण सूर्य उदय जब आता । भेद अभेद मर्म सब लाता ।
मंत्र जाप से मास बिताये । सूर्य स्नेह संग वहाँ बिठाये
पृथ्वी तत्व पर सूर्य जो आये । छः मास को शुभ दिखलाये
घर को छोड़ तत्व जब डोलें । प्रलय काल के पट वो खोलें
जल तत्व स्थिर ऐसे बनाता । फिर कबहु ना कोई आ

Date _____

जब तत्व वायु हो विस्तार । कार्य तब पूर्ण करे संसार ।
तेज तत्व पर सूर्य सवार । जिससे होते शोक अपार ।
जब तत्व आकाश है आता । करके भंग सब काम मिटाता ।
शुभ अशुभ दिन दोनों ओत । मकर भेद छः मास बताते ।
पक्ष भेद जो मैं तुम्हें सुनाता । अँधियारा पक्ष सूर्य का आता ।

मकर संक्रान्ति

उसमें सूर्य चन्द्र की धार । तीन तीन तिथि का किये विचार ।
कहीं प्रकाश कहीं अँधियारा । रवि शशि मंगल सूर्य संभारा ।
चार अंक का कर भेद विचार । कृष्ण पक्ष का करो निर्धार ।
फिर काया में वह समाता । सूर्य काया का तेज बढ़ाता ।

साखी :- काया सूर्य जब उगै, होता पृथ्वी तत्व सवार ।।
तभी शुक्ल शुभ जानिये, कार्य शुभ बने सौ बार ।।

चौपाई

चन्द्र धारा जब तुम्हें सुनाता । कर्क संक्रान्ति छः मास को आता ।
जब उदय चाँद का होता । उदय तब सूर्य भी होता ।
चले तत्व पर सूर्य सवार । छः मास आनन्द व्यवहार ।
घर छोड़ जो तत्व निकलते । फिर कार्य पूर्ण हो ना सकते ।
घर छोड़ जब तत्व ना जाता । संकट बहुत देश पर आता ।
पृथ्वी तत्व पर चन्द्र सवार । प्रेमानन्द और ज्ञान विचार ।
वायु तत्व पर चन्द्र आता । कार्य फिर बन नहीं पाता ।
तेज तत्व पर चाँद जो आवे । पश्चिम दिशा कलेश बढ़ावे ।
आकाश तत्व पर चाँद सवार । भीतर बाहर कष्ट अपार ।
पृथ्वी में चन्द्र जब है उगता । शुक्ल पक्ष भेद अब मैं कहता ।
दो तिथि पक्ष उजियारा । वहाँ केवल चाँद की धारा ।
भेद अभेद तब करो विचार । तीन तिथि चन्द्र सूर्य निर्धार ।
सोम शुक्र गुरु बुध जो आता । चन्द्र स्नेह चार दिन दिखाता ।
रवि शनि मंगलवार विचार । सूर्य इन दिन का है सरदार ।

Date _____

साखी :- ~~दिन तिथि पक्ष संक्रान्ति को, करिये~~
दिन तिथि पक्ष संक्रान्ति को, करिये अचार बिचार।
मूल इसमें है सभी का, जब पूर्ण चन्द्र उजियार॥

चाँद को जो काया में पाता | जो उगै तो सुख संग में लाता।
जल तत्व पर चाँद सवार | सर्वश्व में आनन्द बिचार।
पाँच तत्व भिन्न कहता सारे | तत्व भेद सब रहते न्यारे।
जल तत्व सुफल घर चन्दा | प्रेम विलास अति आनन्दा।
पृथ्वी तत्व चाँद जब आवे | सूर्य मित्र संग भेद करावे।
वायु तत्व पर चाँद जो आता | उदास मन से भ्रमण कराता।
तेज तत्व पर चाँद जो आये | कार्य उत्तम सभी बनाये।
आकाश तत्व पर चाँद जब आता | अभंग कार्यों को वह बनाता।
आकाश तेज जल नहीं आवे | कार्य बिगाड़ कलह करावे।

साखी :- इतने सभी भेद हैं, चन्द्र स्नेह बिचार॥
काया शुभ फल चाहिये, करो शुभ शुक्ल बिचार॥

बानी भेद

अब मैं सुनाता बानी लेख | जो हो ज्ञानी करे विवेक।
प्रथम बानी कीगन निर्माई | अण्डज में बानी वह समाई।
दूजी बानी बिंगल बताये | पिण्डज में बानी वह समाये।
तीजी बानी इंगन है आती | उष्मज में वह जा समाती।
चौथी बानी रिंगन आई | अजल खान में वह समाई।
पाँचवी बानी सिंगन आये | विस्तार नरतन में पाये।
बानी पाँच भेद सभी सुनाते | बिन सतगुरु भेद ना पाते।
जानके बानी तत्व को पाते | पाँचो संग जब ध्यान लगाते।

ध्यान भेद

प्रथम प्रान ध्यान बताते | कीगन संग में उसे लगाते।
दूजा अपना ध्यान का लेख | बिंगल बानी संग करे विवेक।
तीजा समान ध्यान व्यवहार | इंगन बानी संग करो विचार।
चौथा उदान ध्यान का लेख | रिंगन बानी से करो विवेक।

Date

पांची बानी सिंगन लेख । वियान ध्यान से करो विवेक ।

साखी - पाँच ध्यान पाँच बानी, पाँच तत्व विचार ॥
पाँच मुद्रा पाँच तत्व, पाँच लग्न का सार ॥

लग्न भेद

अब मैं कहूँ लग्न व्यवहार । बार लगन करें निरधार ॥
उनके लक्षण नाम सुनाऊँ । चन्द्र सूर्य का भाव बताऊँ ।
अशुभ कर्म सूर्य के होते । शुभ कर्म चन्द्र के होते ।
पाँच उदय सूर्य जब आता । पृथ्वी तत्व पर घर को बनाता ।
क्रूर कर्म सब सिद्ध निवास । वहाँ करो चौका भेद प्रकाश ।
मकर उदय पक्ष अँधियारा । तिथि स्नेह दिन बीति सारा ।
काया उदय सूर्य का सार । पृथ्वी तत्व पर हुआ सवार ।
इस लगन का जमुनी नाम । बिगड़े हंसे पहुँचते धाम ।
चन्द्र बार तिथि सूर्य कहाये । जगपति हम उसको बताये ।
जमुनी लगन जब मृत्यु आये । जगपति बार शुभ कहाये ।
बावड़ी विहार कूप और ताल । भोजन को होता युद्ध विशाल ।
इतने कर्म मैं किया बखान । क्रूर कर्म होते और महान ।
संत साधु का धर्म बताते । कर्म अकर्म सब उनमें समाते ।
क्रूर कर्म है चौका सार । मृतक कर्म का करो विचार ।
चारों वेद भेद हम बताये । सूर्य स्नेह भेद सुनाये ।
जो कोई मोह माया करता । सूर्य स्नेह मन में रखता ।
जन्म जीव वैसा ही पाता । जीवन अपनी वही बिताता ।
चन्द्र स्नेही चैन ना पावे । भ्रमत फिर और काल सतावे ।
क्या है गया क्या है गंगा । बिन सूर्य काम ना चंगा ।
जो कोई जाने ज्ञान का सार । वही सुनाये यह भेद विचार ।
सूर्य के गुण हम किये बखान । तत्व विचार सूर्य के लेना मान ।

साखी: तत्व भेद सब सूर्य का, तुम संग किया बखान ॥
कहें कबीर धर्मदास सुन, यह टकसार अमान ॥

चन्द्र लगन भेद

Date _____

सूर्य भेद का हम कहें विधान | चन्द्र भेद का अब सुनो प्रमान |
चन्द्र स्नेह शुभ कर्म विचार | कर्क संक्रान्ति से चन्द्र निरधार |
योग सिद्ध में भेद विचार | जल में दो तत्व उदय विस्तार |
छः मास को शुभ हैं बताते | इतने कर्क के भेद सुनाते |
पक्ष चन्द्र को दो उजियारा | केवल चान्द की उसपे धारा |
दो तिथि चन्द्र सूर्य संग में आते | तीन चन्द्र तिथि सूर्य बताते |
चन्द्र स्नेह के दिन हैं चार | सोम शुक्र गुरु बुध विचार |
काया चांद जब ऊगे आये | तब सब उदय चन्द्र घर पाये |
नाघट उदय पर सर्व अभंग | कार्य सभी हैं होते भंग |
जल तत्व पर चन्द्र सवार | कार्य सिद्ध होते इस बार |
पांच स्नेह चन्द्र घर आवे | पूनम तिथि वो कहलावे |
उस लगन का प्रतिमा नाम | अखंडित चन्द्र फैले सारे धाम |
शिक्षा से मिलता लगन का ज्ञान | चौका विधि कर विधान |
पुरुष हंस जो भी कहाते | प्रेम से चौका वो करवाते |
इस लग्न जो नारियल पाता | तोड़के तिनका अभय होजाता |
शुभ कर्म का कहूँ प्रमाण | सभी कर्म का कहें विधान |
सर्वप्रथम चौका जगने सजाया | दान पुण्य सब जग ने कराया |
बाग वृक्ष फूल फुलवारी | धर्म निभाती दुनिया सारी |
राजदर्शन वैश्य व्यवहार | स्नान ध्यान गुरुनेम आचार |
औषध और विवाह सगाई | सभी पहर शुभ घड़ी आई |
शुभ कर्म चन्द्र के जान | लक्षण देख चलो विधान |

साखी :- चन्द्र कर्म शुभ सब कहे, गुण निर्गुण निधारि ॥
और भाव अनेक हैं, कहें कबीर विचार ॥

चौपाई

अब सुनो कुछ आदि निशानी | चारों लगन कहूँ मैं ज्ञानी |
प्रतिमा चन्द्र लगन जब आती | जमुना उदय सूर्य कहाती |
जो तिथि चन्द्र सूर्य दिन आवे | निश्चय लग्न जगपति वो कहावे |
जो तिथि चन्द्र सूर्य समान | जगपति लग्न सूर्य को जान |
इस लग्न काल कष्ट अपार | जपके नाम हो उद्धार |

Date

सोलह पारस लग्न विचार । चौदह रीति देख संसार ।
जगपति भेद लग्न के जान । लग्न सूर्य के गहणा को मान ।
जगपति सूर्य लग्न कहाती । चन्द्र कुल को वो है खाती ।
इन लग्न का भेद ना पाये । जमुनी प्रतिमा हंस भुक्ताये ।

चार चौका प्रमाण

चौका चार का सुनो विचार । भिन्न भिन्न के कहूँ मैं सार ।
जन्म का प्रथम चौका सजाना । अंश सौलह नारियल पाना ।
सोलह धोती अस्सी सुपारी । लौंग इलायची लो समधारी ।
दो हजार पान और मिष्ठान । सोलह हाथ चन्दोवा तान ।
दस रत्ती स्वर्ण धातु मंगाओ । आरती को इक थाल मंगाओ ।
इक लोटा इक बेला लाओ । भरकर पानी उन्हें सजाओ ।
बछड़ा सहित गाय को लाना । इस विधि चौका को पुराना ।
इस विधि चौका जो पुराते । पहले कर्म सब मिट जाते ।
तन मन धन से प्रीत लगाये । सतलोक में निश्चित जायें ।

प्रथम चौका विधि

इक्कोतर का अब सुनो प्रमाण । इक्कोतर नारियल चौका विधान ।
लौंग इलायची धोती सुपारी । इक्कोतर लाओ वस्तु सारी ।
पान मिठाई और पकवान । लाओ इक्कोतर सब सामान ।
आरती हेतु कमल दस लाना । इक्कोतर जाप मुख से लगाना ।
इक्कोतर जन्म के पाप नशाते । कर्म अकर्म सब मिट जाते ।
निर्मल हंस की निर्मल देह । पहुँचो जहाँ पुरुष विदेह ।

द्वितीय चौका विधि

सहज चौका को अब जान । जीव सँग नारियल एक विधान ।
उसको सम्मुख अपने रखते । बिना मंत्र ना चौका करते ।
करो छः मास चौका पूजा । चौका छोड़ नहीं दूजो दूजा ।
छः मास जो कर ना पाये । वर्ष भर चौका कर ना पाये ।
भक्त हमारे जो भी कहाते । अराध्य ना कोई और बताते ।

Date

पूज अनेक बहुत दुख पावें | मृत्यु काल यम उन्हें सतावें |
भटके फिरें कहीं घर ना पावें | फिर फिर भव देह धरावें |
दुख और सुख दोनों पावें | एक नाम पुरुष का गावें |
लोक लाज ना उन्हें सतावे | चौका सहज वो करावें |

चालता चौका विधि

चालता चौका कहूँ विचार | बारह नारियल का विस्तार |
आठ सुपारी पन्द्रह सौ पान | लौंग इलायची लाओ विद्वान |
पन्द्रह सेर मिठाई लावे | बारह धोती लाके चढ़ावे |
पाँच पात्र धातु के प्राते | सोलह हाथ चन्दावा सजाते |
पाँच खंभ का मण्डप सजावे | नये पुराने वस्त्र मंगवावे |
मंगल गा कर सारे जोत | परदा करके माटी लोते |
उस माटी की वेदि बनावे | बछड़ा सहित गाय चढ़ावे |
साधु भोजन भक्त करावे | पन्द्रह सेर पकवान चढ़ावे |
चार पहर सब साज को करते | सोलह सुत की पोषी करते |
चार पहर नित बैठक करते | सूर्य स्नेह संग चौका करते |
सूर्यध्यान कर हाथ को जोड़े | पृथ्वी तत्व में नारियल तोड़े |
भात बहुत हम तुम्हें बताते | जान इन्हें सब कष्ट मिटाते |
अमृत अंक का बीरा पावें | बिगड़े हंस लोक को जावें |
पान प्रसाद वंश हेतू पाते | निशदिन नाम हमारा ध्याते |
छूटें हंस कर्म के पार | चार उदय घट सूर्य विचार |
चन्द हेतू जो चौका करते | चन्द लगन से काल हैं डरते |
चौथा चौका चलेव नाम | सूर्य लगन मन में ध्यान |
मानुष तन ना कर्म सतावें | सरलता से परम पद पावें |
चारों चौका जो ऐसे करते | औरों को तारें खुद भी तरते |
भेद चुरामणि खण्ड अपार | चुरामणि बस इस विचार |
नाम प्रताप नर बोही पाते | भेद जिन्हें कहिहार सुनाते |
जो होते हैं भक्त हमारे | जानता भेद बोही सारे |
अंश वंश की परख ना पाते | पढ़ ज्ञान काल घर जाते |
बिन गुरु भेद जिसने पाये | बिन पुरुष नारी वो कहाया |

Date

बिना छत्र ज्यों लश्कर फिरते । बिन गुरु ज्ञान कौन है रखते ।
हमारे पंथ के गुरु धर्मदास । जिनके वंश गुरु जग्त प्रकाश ।
यह वंश ज्ञान ऐसा सुनाते । भक्त संग नरक को सिधाते ।
त्याग मन क्रोध अभिमान । जो गहे वंश हमारा ज्ञान ।
इतना भेद है यह हमारा । ज्ञान बहुत जग में सारा ।
वंश ज्ञान जो कड़िहार है पाते । भव सागर जीव वह मुक्ताते ।
जो वंश ज्ञान ना पाते । भक्त संग वह गुरु नशाते ।
इतना भेद है अगम अपार । नीर पवन चन्द्र सूर्य की धार ।
कार्य सिद्ध नीर युक्ति जान । श्रेष्ठ गुरु वचन को मान ।
उत्तर पूरब चन्द्र की माने । दक्षिण पश्चिम सूर्य की जाने ।

साखी :- इतना भेद चन्द्र सूर्य का, पाँच तत्व निज सार ॥
दिन तिथि पक्ष उदय का कहें, सत्य वही कड़िहार ॥
कहे कबीर मानो उसे, जो जाने सच्चा ज्ञान ॥
चन्द्र सूर्य जो भेद कहे, वो सन्त अति अज्ञान ॥

— चौका स्वरोदय समाप्त —